वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है: संजय

पिस्का नगड़ी। वन उत्पादकता संस्थान, रांची में शुक्रवार को वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव के द्वारा झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार, शशिकर सामंत, कुलवंत सिंह, एन.के. सिंह, दीक्षा प्रसाद, अशोक कुमार, डी.के. सक्सेना, संजीव कुमार, संपत कुमार, प्रवीण झा, वाईके दास, विश्वनाथ शाह, सिद्धार्थ त्रिपाठी, मनीष अरविंद सहित अधिकारियों ने दीप प्रज्वलित कर किया।

मुख्य अतिथि संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद हमलोग मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने इस अवसर पर समस्त गणमान्यों का स्वागत करते हुए बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया।

इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ झारखंड राज्य में ही 1311 स्थानों की 16670 मृदा के नमूनों का एकत्रीकरण एवं उनका विश्लेषण सम्मिलित था।

भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, आरडीडी+, ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है।

कार्यक्रम में संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की एवं अन्य अधिकारी सम्मिलित रहे।

अंजना तिर्की के द्वारा किया गया एवं संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र के द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

विश्व विकलांग दिवस पर झारखंड सरकार दिव्यांग जन अधिकार विधेयक 2016 को पूर्णरूपेण लागू करें:संजय सर्राफ

मध्य प्रदेश से खेल कर लौटने पर फुटबॉल खिलाड़ियों का भव्य स्वागत

वन उत्पादकता संस्थान में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन आयोजित

राष्ट्रीय सागर संवददाता

पिस्का नगड़ी : वन उत्पादकता संस्थान, रांची में शुक्रवार को वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव के द्वारा झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार, शशिकर सामंत, कुलवंत सिंह, एन.के. सिंह, दीक्षा प्रसाद, अशोक कुमार, डी.के. सक्सेना, संजीव कुमार, संपत कुमार, प्रवीण झा, वाईके दास, विश्वनाथ शाह, सिद्धार्थ त्रिपाठी, मनीष अरविंद सहित अधिकारीयों ने दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद हमलोग मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं। वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने इस अवसर पर समस्त गणमान्यों का स्वागत करते हुए बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ झारखंड राज्य में ही 1311 स्थानों की 16670 मृदा के नमूनों का एकत्रीकरण एवं उनका विश्लेषण सम्मिलित था। भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, आरडीडी+, ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है। कार्यक्रम मे संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की एवं अन्य अधिकारी सम्मिलित रहे। अंजना तिर्की के द्वारा किया गया एवं संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र के द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम 'वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड' का किया लोकार्पण

रांची (हि.स) : पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार वानिकी अनुसंधान, शिक्षा परिषद, देहरादून के अधीन वन उत्पादकता संस्थान में झारखंड राज्य के लिए शुक्रवार को देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मौके पर झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है। क्योंकि दो दिनों बाद मृदा दिवस मनाया जाएगा. इस हेल्थ कार्ड में बताया गया है कि 95 प्रतिशत खाद्य का मुख्य स्त्रोत मिट्टी है। रिपोर्ट के आधार पर विश्व प्रति सेकंड एक एकड़ जमीन का मृदा खो रहा है और 60 साल बाद हम मृदा विहीन हो जायेंगे। इसकी कल्पना कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वहीं रांची के वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया था। इसमें वन उत्पादकता संस्थान, रांची भी सहभागी था, जो पूर्वी क्षेत्र के वन अनुसंधान कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया है। उन्होंने कहा कि कोविड की समस्या के बावजूद भी संस्थान के द्वारा तय समय सीमा के अंदर राज्य के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया। इसमें ढाई से तीन बिलियन कार्बन को कम करना एक बड़ी जिम्मेवारी है, जिसे हमें हासिल करना है। तीस प्रतिशत जमीन अवक्रमित हैं तथा 68 प्रतिशत अवक्रमित हो रहे हैं, जो भविष्य और अगली पीढ़ी के लिए चिंता का विषय है। राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार ने परियोजना का सिंहावलोकन कर बताया कि वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण का मुख्य उदेश्य राज्य में अवक्रमित मृदा की उर्वरता संबंधी बाधाओं का निदान कर मिट्टी के पोषक तत्व प्रबंधन प्रथाओं का सुझाव देकर उसे गैर अवक्रमित मिट्टी के स्तर तक पहुंचाया जा सके। प्रस्तावित अध्ययन मृदा की गुणवत्ता के मापदंडों पर जानकारी प्रदान करेगा जो राज्य के वन विभाग के लिए वनों के स्थायी प्रबंधन, वृक्षारोपण, हितधारकों के लिए मिट्टी की गुणवत्ता के आधार पर वृक्ष प्रजाति का चयन करने तथा स्थान की पहचान करने में मदद करेगा। संस्थान के प्रधान अन्वेषक डॉ शंभु नाथ मिश्रा ने झारखंड राज्य के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण के बारे मे प्रस्तुतीकरण किया। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा जीआईएस और रिमोट सेंसिंग की सहायता से झारखंड राज्य के 31 प्रादेशिक वन प्रमंडलों से 1311 स्थानों से मिट्टी के नमूनों को एकत्र कर संस्थान के प्रयोगशाला मे 16670 मृदा विश्लेषण किया गया और सांख्यिकीय मदद से नमूना बिंदुओं तथा मृदा में उपलब्ध बुनियादी पोषक तत्वों, प्रमुख पोषक तत्वों, माध्यमिक पोषक तत्वों एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों का सीमांकन कर देश में सर्वप्रथम झारखंड राज्य के 31 वन प्रमंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया।

रांची | वन उत्पादकता संस्थान के प्रयास से वनों के किनारे रहने वाले ग्रामीणों को मिलेगा लाभ

'वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड' का किया गया लोकार्पण

संवाददाता। रांची

रांची में झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया. विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव उपस्थित थे. इस मौके पर संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है. क्योंकि दो दिन बाद मृदा दिवस मनाया जाएगा. इस हेल्थ कार्ड में बताया गया है कि 95 प्रतिशत खाद्य का मुख्य स्त्रोत मिट्टी है. रिपोर्ट के आधार पर विश्व प्रति सेकंड एक एकड़ जमीन का मृदा खो रहा है. और 60 साल बाद हम मृदा विहीन हो जाएंगे. इसकी कल्पना कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं. वहीं रांची के वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया. परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया था. इसमें वन उत्पादकता संस्थान, रांची भी सहभागी था, जो पूर्वी क्षेत्र के वन अनुसंधान कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है. इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया है. इसका लाभ वनों के किनारे रहने वाले ग्रामीण जनता तक पहुंचेगा तथा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड क्षेत्र की मृदा संबंधी बाधाओं की पहचान करने के लिए बहुत उपयोगी होगा.

वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड निर्माण का प्रस्तुतिकरण

संस्थान के प्रधान अन्वेषक डॉ शंभु नाथ मिश्रा ने झारखंड राज्य के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण के बारे में प्रस्तुतीकरण किया. उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा जीआईएस और रिमोट सेंसिंग की सहायता से झारखंड राज्य के 31 प्रादेशिक वन प्रमंडलों से 1311 स्थानों से मिट्टी के नमूनों को एकत्र कर संस्थान के प्रयोगशाला मे 16670 मृदा विश्लेषण किया गया और सांख्यिकीय मदद से नमूना बिंदुओं तथा मृदा मे उपलब्ध बुनियादी पोषक तत्वों, प्रमुख पोषक तत्वों, माध्यमिक पोषक तत्वों एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों का सीमांकन कर देश मे सर्वप्रथम झारखंड राज्य के 31 वन प्रमंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया.

वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन

संवाददाता

पिस्का नगड़ी : वन उत्पादकता संस्थान, रांची में शुक्रवार को वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव के द्वारा झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार, शशिकर सामंत, कुलवंत सिंह, एन.के. सिंह, दीक्षा प्रसाद, अशोक कुमार, डी.के. सक्सेना, संजीव कुमार, संपत कुमार, प्रवीण झा, वाईके दास, विश्वनाथ शाह, सिद्धार्थ त्रिपाठी, मनीष अरविंद सहित अधिकारीयों ने दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद हमलोग मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं। वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने इस अवसर पर समस्त गणमान्यों का स्वागत करते हुए बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ झारखंड राज्य में ही 1311 स्थानों की 16670 मृदा के नमूनों का एकत्रीकरण एवं उनका विश्लेषण सम्मिलित था। भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, आरडीडी+, ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है। कार्यक्रम मे संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की एवं अन्य अधिकारी सम्मिलित रहे। अंजना तिर्की के द्वारा किया गया एवं संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र के द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का किया लोकार्पण

प्रभात मंत्र संवाददाता

रांची : पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार वानिकी अनुसंधान, शिक्षा परिषद, देहरादून के अधीन वन उत्पादकता संस्थान में झारखंड राज्य के लिए शुक्रवार को देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मौके पर झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है। क्योंकि दो दिनों बाद मृदा दिवस मनाया जाएगा. इस हेल्थ कार्ड में बताया गया है कि 95 प्रतिशत खाद्य का मुख्य स्त्रोत मिट्टी है। रिपोर्ट के आधार पर विश्व प्रति सेकंड एक एकड़ जमीन का मृदा खो रहा है और 60 साल बाद हम मृदा विहीन हो जायेंगे। इसकी कल्पना कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वहीं रांची के वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरु किया गया। परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरु किया गया था। इसमें वन उत्पादकता संस्थान, रांची भी सहभागी था, जो पूर्वी क्षेत्र के वन अनुसंधान कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया है।उन्होंने कहा कि कोविड की समस्या के बावजूद भी संस्थान के द्वारा तय समय सीमा के अंदर राज्य के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया। इसमें ढाई से तीन बिलियन कार्बन को कम करना एक बड़ी जिम्मेवारी है, जिसे हमें हासिल करना है। तीस प्रतिशत जमीन अवक्रमित हैं तथा 68 प्रतिशत अवक्रमित हो रहे हैं, जो भविष्य और अगली पीढ़ी के लिए चिंता का विषय है। राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार ने परियोजना का सिंहावलोकन कर बताया कि वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण का मुख्य उदेश्य राज्य में अवक्रमित मृदा की उर्वरता संबंधी बाधाओं का निदान कर मिट्टी के पोषक तत्व प्रबंधन प्रथाओं का सुझाव देकर उसे गैर अवक्रमित मिट्टी के स्तर तक पहुंचाया जा सके। प्रस्तावित अध्ययन मृदा की गुणवत्ता के मापदंडों पर जानकारी प्रदान करेगा जो राज्य के वन विभाग के लिए वनों के स्थायी प्रबंधन, वृक्षारोपण, हितधारकों के लिए मिट्टी की गुणवत्ता के आधार पर वृक्ष प्रजाति का चयन करने तथा स्थान की पहचान करने में मदद करेगा। संस्थान के प्रधान अन्वेषक डॉ शंभु नाथ मिश्रा ने झारखंड राज्य के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण के बारे मे प्रस्तुतीकरण किया। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा जीआईएस और रिमोट सेंसिंग की सहायता से झारखंड राज्य के 31 प्रादेशिक वन प्रमंडलों से 1311 स्थानों से मिट्टी के नमूनों को एकत्र कर संस्थान के प्रयोगशाला मे 16670 मृदा विश्लेषण किया गया और सांख्यिकीय मदद से नमूना बिंदुओं तथा मृदा में उपलब्ध बुनियादी पोषक तत्वों, प्रमुख पोषक तत्वों, माध्यमिक पोषक तत्वों एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों का सीमांकन कर देश में सर्वप्रथम झारखंड राज्य के 31 वन प्रमंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया।

Text&Co

THE HINDU

IBERS

More than half of Jharkhand's forest land unfit for growth

69 The percentage of soil in Jharkhand's forest areas that has turned unfit for plant growth due to acute deficiency of nitrogen, according to the Forest Soil Health Card report. The report was prepared by the institute of Forest Productivity upon the direction of the Ministry of Forest and Environment. The institute collected 16,670 soil samples in 31 forest divisions. PTI

Bio-economy grew rapidly under Modi rule, says Minister

80 In $ billion, the worth of India's bio-economy in 202[illegible] which has grown eight tim[illegible] from $10 billion in 2014 under the Modi Government, according to Union Ministe[illegible] Jitendra Singh. The Minister of State in th[illegible] Prime Minister's Office said three biotech startups were incorporated every day in 2021 and 1,128 biotech startups were set up last year alone. PTI

देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का लोकार्पण

पंच संवाददाता

रांची । पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार वानिकी अनुसंधान, शिक्षा परिषद, देहरादून के अधीन वन उत्पादकता संस्थान, रांची में झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव उपस्थित थे।

95 फीसदी खाद्य का मुख्य स्रोत मिट्टी

इस मौके पर संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है. क्योंकि दो दिनों बाद मृदा दिवस मनाया जाएगा. इस हेल्थ कार्ड में बताया गया है कि 95 प्रतिशत खाद्य का मुख्य स्त्रोत मिट्टी है। रिपोर्ट के आधार पर विश्व प्रति सेकंड एक एकड़ जमीन का मृदा खो रहा है. और 60 साल बाद हम मृदा विहीन हो जायेंगे। इसकी कल्पना कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वहीं रांची के वन उत्पादकता संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि भारत सरकार के पर्यावरण,वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। परिषद के महानिदेशक अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया था. इसमें वन उत्पादकता संस्थान, रांची भी सहभागी था, जो पूर्वी क्षेत्र के वन अनुसंधान कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है. इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया है.तय समय के भीतर वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण

कोविड की समस्या के बावजूद भी संस्थान के द्वारा तय समय सीमा के अंदर राज्य के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया. इसमें ढाई से तीन बिलियन कार्बन को कम करना एक बड़ी जिम्मेवारी है. जिसे हमें हासिल करना है. तीस प्रतिशत जमीन अवक्रमित हैं तथा 68 प्रतिशत अवक्रमित हो रहे हैं, जो भविष्य और अगली पीढ़ी के लिए चिंता का विषय है। राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार ने परियोजना का सिंहावलोकन कर बताया कि वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण का मुख्य उदेश्य राज्य में अवक्रमित मृदा की उर्वरता संबंधी बाधाओं का निदान कर मिट्टी के पोषक तत्व प्रबंधन प्रथाओं का सुझाव देकर उसे गैर अवक्रमित मिट्टी के स्तर तक पहुंचाया जा सके. प्रस्तावित अध्ययन मृदा की गुणवत्ता के मापदंडों पर जानकारी प्रदान करेगा जो राज्य के वन विभाग के लिए वनों के स्थायी प्रबंधन, वृक्षारोपण, हितधारकों के लिए मिट्टी की गुणवत्ता के आधार पर वृक्ष प्रजाति का चयन करने तथा स्थान की पहचान करने में मदद करेगा।

लाभ वनों के किनारे रहने वाले ग्रामीणों को मिलेगा

इसका लाभ वनों के किनारे रहने वाले ग्रामीण जनता तक पहुंचेगा तथा वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड क्षेत्र की मृदा संबंधी बाधाओं की पहचान करने के लिए बहुत उपयोगी होगा. भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, फ्एडडी+, ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है। देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी करने के लिए राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक के नाते मई संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी एवं परियोजना अन्वेषक को बधाई भी दी गई। वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड निर्माण का प्रस्तुतिकरण संस्थान के प्रधान अन्वेषक डॉ शंभु नाथ मिश्रा ने झारखंड राज्य के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के निर्माण के बारे मे प्रस्तुतीकरण किया. उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा जीआईएस और रिमोट सेंसिंग की सहायता से झारखंड राज्य के 31 प्रादेशिक वन प्रमंडलों से 1311 स्थानों से मिट्टी के नमूनों को एकत्र कर संस्थान के प्रयोगशाला मे 16670 मृदा विश्लेषण किया गया और सांख्यिकीय मदद से नमूना बिंदुओं तथा मृदा मे उपलब्ध बुनियादी पोषक तत्वों, प्रमुख पोषक तत्वों, माध्यमिक पोषक तत्वों एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों का सीमांकन कर देश मे सर्वप्रथम झारखंड राज्य के 31 वन प्रमंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण किया गया। कार्यक्रम में शशिकर सामंत, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन्यजीव, कुलवंत सिंह, अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कार्य योजना, एन.के. सिंह, मुख्य वन संरक्षक, वन्यजीव, सिद्धार्थ त्रिपाठी, संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की, भा.व.से.एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

सूर्योदय प्रातः 6:15 सूर्यास्त संध्या 5:02 मार्गशीर्ष शु. दशमी, संवत 2079 अधिकतम 25° न्यूनतम 12°
फ्रीडम फाइटर
राष्ट्रहित सर्वोपरि रांची, पटना व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का किया गया विमोचन

फ्रीडम फाइटर संवाददाता

पिस्का नगड़ी : वन उत्पादकता संस्थान, रांची में शुक्रवार को वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव द्वारा झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार, शशिकर सामंत, कुलवंत सिंह, एन.के. सिंह, दीक्षा प्रसाद, अशोक कुमार, डी.के. सक्सेना, संजीव कुमार, संपत कुमार, प्रवीण झा, वाईके दास, विश्वनाथ शाह, सिद्धार्थ त्रिपाठी, मनीष अरविंद

सहित अधिकारीयों ने दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद हमलोग मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं। वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने इस अवसर पर समस्त गणमान्यों का स्वागत करते हुए बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ झारखंड राज्य में ही 1311 स्थानों की 16670 मृदा के नमूनों का एकत्रीकरण एवं उनका विश्लेषण सम्मिलित था।

भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, आरइडीडी+, ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है। कार्यक्रम मे संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की एवं अन्य अधिकारी सम्मिलित रहे। अंजना तिर्की द्वारा किया गया एवं संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

वन उत्पादकता संस्थान में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन आयोजित

राष्ट्रीय सागर संवददाता

पिस्का नगड़ी : वन उत्पादकता संस्थान, रांची में शुक्रवार को वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव के द्वारा झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार, शशिकर सामंत, कुलवंत सिंह, एन.के. सिंह, दीक्षा प्रसाद, अशोक कुमार, डी.के. सक्सेना, संजीव कुमार, संपत कुमार, प्रवीण झा, वाईके दास, विश्वनाथ शाह, सिद्धार्थ

त्रिपाठी, मनीष अरविंद सहित अधिकारीयों ने दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद हमलोग मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं। वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने इस अवसर पर समस्त गणमान्यों का स्वागत करते हुए बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया। इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ झारखंड राज्य में ही 1311 स्थानों की 16670 मृदा के नमूनों का एकत्रीकरण एवं उनका विश्लेषण सम्मिलित था। भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, आरइडीडी+, ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है। कार्यक्रम मे संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की एवं अन्य अधिकारी सम्मिलित रहे। अंजना तिर्की के द्वारा किया गया एवं संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र के द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

निर्माण के साथ ही सड़क लगी टूटने

वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है: संजय

[illegible]

पिस्का नगड़ी। वन उत्पादकता संस्थान, रांची में शुक्रवार को वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि झारखंड राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख संजय श्रीवास्तव के द्वारा झारखंड राज्य के लिए देश का प्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक, वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के डॉ. विजेंदर पाल पंवार, शशिकर सामंत, कुलवंत सिंह, एन.के. सिंह, दीक्षा प्रसाद, अशोक कुमार, डी.के. सक्सेना, संजीव कुमार, संपत

कुमार, प्रवीण झा, वाईके दास, विश्वनाथ शाह, सिद्धार्थ त्रिपाठी, मनीष अरविंद सहित अधिकारीयों ने दीप प्रज्वलित कर किया।

मुख्य अतिथि संजय श्रीवास्तव ने कहा कि वन उत्पादकता संस्थान ने देश में सर्वप्रथम वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड सही समय पर जारी कर इतिहास बनाया है क्योंकि दो दिनों बाद हमलोग मृदा दिवस मनाने जा रहे हैं।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने इस अवसर पर समस्त गणमान्यों का स्वागत करते हुए बताया कि भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्वीकृति के बाद भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा अरुण सिंह रावत के निर्देशन में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण कार्य शुरू किया गया।

इस संस्थान को झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य सौंपा गया । इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सिर्फ झारखंड राज्य में ही 1311 स्थानों की 16670 मृदा के नमूनों का एकत्रीकरण एवं उनका विश्लेषण सम्मिलित था।

भारत वनाच्छादन, मृदा की गुणवत्ता, आरइडीडी+, ग्रीन हाईवे आदि को ध्यान में रखकर एक लक्ष्य निर्धारित किया है। कम बजट में वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड का निर्माण के लिए सुगम से सुगम तकनीक अपनाया गया है।

कार्यक्रम मे संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र, डॉ. शरद तिवारी, संजीव कुमार, डॉ. अनिमेष सिन्हा, अंजना तिर्की एवं अन्य अधिकारी सम्मिलित रहे।

अंजना तिर्की के द्वारा किया गया एवं संस्थान के डॉ. योगेश्वर मिश्र के द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

विश्व विकलांग दिवस पर झारखंड सरकार दिव्यांग जन अधिकार विधेयक 2016 को पूर्णरूपेण लागू करें:संजय सर्राफ

मध्य प्रदेश से खेल कर लौटने पर फुटबॉल खिलाड़ियों का भव्य स्वागत